+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

YOJANA MAGAZINE ANALYSIS

(योजना पत्रिका विश्लेषण)

(भारतीय ज्ञान परंपरा)

(January 2025)

(Part I)

TOPICS TO BE COVERED

- भविष्य को रोशन करती, भारत की ज्ञान विरासत
- भारतीय ज्ञान प्रणाली की विरासत
- भारतीय ज्ञान प्रणाली की उपनिवेशीकरण से मुक्ति

भविष्य को रोशन करती, भारत की ज्ञान विरासत:

परिचय:

- प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर आज तक, भारत की बौद्धिक परंपराओं में जिज्ञासा, परीक्षण और अन्वेषण की भावना रही है। सदियों से, भारतीय विद्वान, वैज्ञानिक और दार्शनिक नवाचार के मामले में सबसे आगे रहे हैं।

भारत की ज्ञान विरासत:

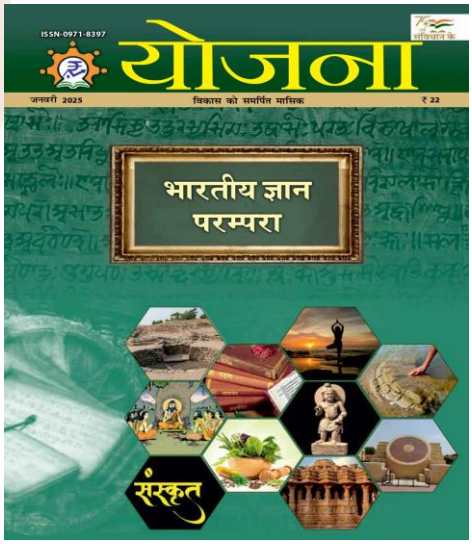

- 5वीं शताब्दी के महान गणितज्ञ और खगोलशास्त्री आर्यभट्ट ने गणित और खगोल विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। शून्य और दशमलव प्रणाली पर उनके अग्रणी कार्यों ने इन विषयों में महत्वपूर्ण प्रगति की नींव रखी। आर्यभट्ट ने यह क्रांतिकारी विचार भी प्रस्तुत किया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है, जो उनके समय से बहुत आगे की अवधारणा है।
- प्रसिद्ध संस्कृत व्याकरणविद् पाणिनि ने अष्टाध्यायी विकसित की, जो भाषा विज्ञान पर एक व्यापक ग्रंथ है और अपनी गहराई तथा परिष्कार में अद्वितीय है।

- पतंजलि के योगसूत्र, जो दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के हैं, शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक कल्याण की खोज में दुनिया भर के लाखों लोगों को प्रेरित करते रहते हैं और उनका मार्गदर्शन करते रहे हैं।
- भारत की समृद्ध विरासत नवाचार और उत्कृष्टता के उदाहरणों से भरी पड़ी है। प्राचीन भारतीयों के जटिल धातु विज्ञान से लेकर जंतर मंतर वेधशालाओं के परिष्कृत खगोल विज्ञान तक, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित की दुनिया में भारत के योगदान को नकारा नहीं जा सकता।

पारंपरिक भारतीय चिकित्सा प्रणालियां:

- चिकित्सा के क्षेत्र में, आयुर्वेद की प्राचीन भारतीय प्रणाली को स्वास्थ्य और कल्याण के लिए इसके समग्र दृष्टिकोण के वास्ते विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा मान्यता दी गई है। आयुर्वेद पर दो मौलिक ग्रंथ 'चरक संहिता' और 'सुश्रुत संहिता' में मानव शरीर रचना विज्ञान, शरीर विज्ञान और औषधि विज्ञान के बारे में बहुमूल्य ग्रंथ है।
- आयुर्वेद, योग और अन्य पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों को बढ़ावा देने की सरकार की पहलों ने भी प्रभावशाली परिणाम दिए हैं। अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान की

स्थापना ने इन प्राचीन चिकित्सा प्रणालियों को मानकीकृत और लोकप्रिय बनाने में मदद की है। इसके अतिरिक्त, 9 नवंबर, 2014 को आयुष मंत्रालय की स्थापना ने पारंपरिक भारतीय चिकित्सा प्रणालियों को काफी बढ़ावा दिया है।

परम्परागत ज्ञान प्रणालियों को बढ़ावा देने की भारत की योजना:

- हाल के वर्षों में, भारत सरकार ने भारत की ज्ञान प्रणालियों को बढ़ावा देने और संरक्षित करने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं, जिससे गर्व और सांस्कृतिक प्रशंसा की भावना फिर से जागृत हुई है। पुरावशेषों के प्रत्यावर्तन (किसी पुरावशेष को उसके मूल देश में वापस लाना) ने इस पुनरुत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिसमें अमेरिका, ब्रिटेन और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों से उल्लेखनीय वापसी हुई है।
- इन प्रयासों ने न केवल भारत की खोई हुई विरासत को पुनः प्राप्त करने में मदद की है, बल्कि देश की प्राचीन संस्कृति पर नए सिरे से गर्व भी जताया है।
- इसके अलावा, कई आईआईटी में भारतीय ज्ञान प्रणालियों के लिए उत्कृष्टता केंद्रों की स्थापना एक दूरगामी पहल है जिसका उद्देश्य आयुर्वेद, योग और पारंपरिक भारतीय गणित जैसे क्षेत्रों में अंतःविषय अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देना है। ये पहल हमारी समृद्ध बौद्धिक विरासत के साथ गहरा संबंध बढ़ा रही हैं और सांस्कृतिक गौरव तथा नवाचार के एक नए युग को प्रेरित कर रही हैं।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

- इसके अलावा, योग को वैश्विक मंच पर ले जाने के सरकार के प्रयासों के भी लाभकारी परिणाम सामने आए है, संयुक्त राष्ट्र ने 2014 में 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में घोषित किया, जो कल्याण और आध्यात्मिकता के क्षेत्र में भारत की स्थायी विरासत का प्रमाण है।

उपसंहार:

- हम जैसे-जैसे इस तेजी से बदलती दुनिया में आगे बढ़ रहे हैं, यह आवश्यक है कि हम भारत की समृद्ध बौद्धिक विरासत का लाभ उठाएं। अतीत में अपने पूर्वजों की उपलब्धियों का लाभ उठाते हुए हम अपने लिए और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक उज्ज्वल और अधिक टिकाऊ भविष्य बना सकते हैं।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

भारतीय ज्ञान प्रणाली की विरासत:

परिचय:

- अक्टूबर 2020 में, भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) नामक एक प्रभाग की स्थापना की, जिसका मुख्यालय नई दिल्ली में अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (AICTE) में है। इसके बाद विभिन्न संस्थानों में भारतीय ज्ञान प्रणाली के कई केंद्र स्थापित किए गए।

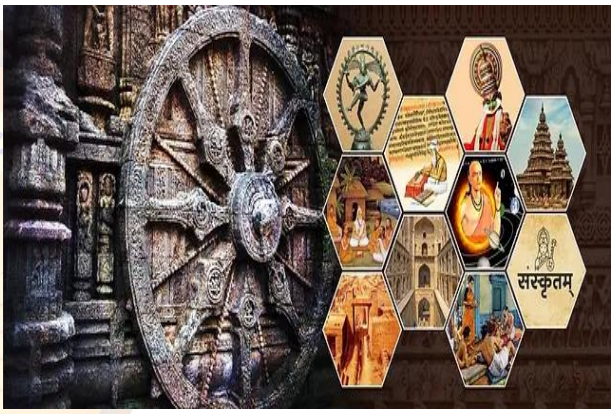

- ऐसे में यह समझना उचित है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली का गठन क्या है?

'भारतीय ज्ञान' की विशेषताएं क्या हैं?

- 'भारतीय ज्ञान' शब्द के साथ कुछ अनोखा है, जो प्राचीन काल से भारतीय उपमहाद्वीप में ज्ञान के निरंतर प्रवाह को दर्शाता है। इसकी अनूठी विशेषता यह है कि 'भारतीय ज्ञान' का उद्देश्य व्यक्ति के समग्र विकास के लिए उसे भौतिकवादी और आध्यात्मिक जीवन के लिए योग्य बनाना है।

- विष्णु पुराण कहता है 'सा विद्या या विमुक्तये', इस प्रकार ज्ञान का उद्देश्य मुक्ति (दुःख और बंधन से) के रूप में परिभाषित किया गया है।
- ईशावास्योपनिषद में आध्यात्मिक ज्ञान को विद्या और भौतिक ज्ञान को अविद्या कहा गया है, तथा यह विद्या और अविद्या दोनों को सीखने पर जोर देता है। उसका मानना है कि केवल एक ही प्रकार के ज्ञान का ज्ञान खतरनाक है। यह सुझाव देता है कि मनुष्य को भौतिक ज्ञान की मदद से सुखी सांसारिक जीवन जीना चाहिए और आध्यात्मिक ज्ञान की मदद से अमर स्थान प्राप्त करना चाहिए।
- 'भारतीय ज्ञान' काफी हद तक परंपरा पर आधारित है। मानव सभ्यता के आरंभ से ही परंपराएं पीढ़ी दर पीढ़ी निरंतर चलती रहीं। साथ ही, परंपराओं में सुधार भी होते रहे हैं और 'भारतीय ज्ञान' विकसित होता रहा है।

प्राचीन प्रलेखित ज्ञान के रूप में वेदों का महत्व:

- प्रलेखित ज्ञान के क्षेत्र में वेद ज्ञान के सबसे पुराने ग्रंथ हैं। संस्कृत में वेद का अर्थ है 'ज्ञान'। विद्वानों की दृष्टि से, वेद के ज्ञान को चार वेदों- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के रूप में प्रलेखित किया गया है। चार उपवेद भी हैं- आयुर्वेद (चिकित्सा का अध्ययन), धनुर्वेद (धनुर्विद्या और युद्ध का अध्ययन), गंधर्ववेद (प्रदर्शन कलाओं का अध्ययन) और शिल्पवेद (वास्तुकला का अध्ययन)।

- वेदों में दार्शनिक और व्यावहारिक ज्ञान दोनों शामिल हैं। उपनिषद् दार्शनिक शिक्षाओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं। वेदों की अवधारणा को सरल भाषा में समझाने के लिए पुराण लिखे गए हैं। इसमें कहानियों के रूप में गहरे दार्शनिक वैज्ञानिक विचारों के बीज भी हैं। उदाहरण के लिए, ब्रह्मवैवर्त पुराण में रेवती की एक दिलचस्प कहानी है, जो बताती है कि भारतीय दार्शनिकों के लिए, समय कोई निरपेक्ष इकाई नहीं थी; यह आइंस्टीन के सापेक्षता के सिद्धांत के समान था।

वैदिक सभ्यता की समय-सीमा को लेकर विवाद:

- वैदिक सभ्यता को समय-सीमाएं निर्धारित करना बहुत कठिन है। वेद का ज्ञान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को मौखिक रूप से प्रसारित किया जाता था। पुराणों की युग प्रणाली के अनुसार कलियुग की शुरुआत 3102 ईसा पूर्व हुई थी।
- आधुनिक इतिहासकारों के दृष्टिकोण के विपरीत, वैदिक सभ्यता हजारों नहीं, बल्कि लाखों वर्ष पुरानी है। जबकि आधुनिक इतिहासकारों के अनुसार, वैदिक सभ्यता लगभग 1500 ईसा पूर्व शुरू हुई थी, जबकि सिंधु घाटी सभ्यता लगभग 3300 ईसा पूर्व शुरू हुई थी।

पुराणों को लेकर विकृत धारणाएं:

- उल्लेखनीय है कि पुराणों का दस्तावेजीकरण चौथी शताब्दी ईसा पूर्व से 11वीं शताब्दी ईसवी के अंतराल में किया गया था। यह आरोप लगाया जाता है कि उनमें कुछ विकृत पाठ हैं, क्योंकि एक पाठ के कई संस्करण हैं।
- अंग्रेजों की शिक्षा नीति की शुरुआत के साथ, पुराणों के अध्ययन में गिरावट आई। परिणामस्वरूप, अधूरे और गलत ज्ञान के कारण कुछ गलत धारणाएं हैं। उदाहरण के लिए, पुराण वर्ण व्यवस्था की बात करते हैं। हालांकि, यह कार्य पर आधारित है और कार्यों को शिक्षा, सुरक्षा, व्यवसाय और सेवा के रूप में वर्गीकृत किया गया है। क्योंकि ऐसा उल्लेख मिलता है कि विभिन्न द्वीपों में चार वर्णों, अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र को अलग-अलग नामों से पुकारा जाता था।

वैदिक सभ्यता के समानांतर भारतीय ज्ञान विधाएं:

- वैदिक सभ्यता से अलग कई समानांतर विधाएं, जो अग्नि संस्कारों में विश्वास नहीं करते थे। दो प्रमुख मार्ग जैन धर्म और बौद्ध धर्म हैं।
- आधुनिक इतिहासकारों के अनुसार, जैन धर्म की शुरुआत वर्धमान महावीर (लगभग 599 ईसा पूर्व- 527 ईसा पूर्व) ने की थी। हालांकि, जैन परंपरा के अनुसार, जैन

धर्म वैदिक सभ्यता जितना ही पुराना है। महावीर इसके 24वें तीर्थंकर थे। पहले तीर्थंकर, ऋषभ देव के एक पुत्र थे जिनका नाम भरत था, जिनके नाम पर इस राष्ट्र का नाम रखा गया है।

- इसी तरह, बौद्ध धर्म भी बहुत पुराना है, हालांकि आधुनिक इतिहासकारों के अनुसार इसकी स्थापना गौतम बुद्ध (लगभग 563 ईसा पूर्व - 483 ईसा पूर्व) ने की थी। जैन धर्म और बौद्ध धर्म दोनों का भारतीय ज्ञान प्रणालियों में बड़ा हिस्सा है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली के विभिन्न आयाम:

गणित और खगोल विज्ञान में भारतीय ज्ञान प्रणाली:

- ऐतिहासिक काल में, गणित और खगोल विज्ञान पर बहुत काम देखते हैं। कुछ प्रसिद्ध गणितज्ञ और खगोलशास्त्री हैं बौधायन (लगभग 800-700 ईसा पूर्व), पाणिनि (लगभग 520-460 ईसा पूर्व), कात्यायन (लगभग 300-200 ईसा पूर्व), भरत मुनि (लगभग 400-200 ईसा पूर्व), आर्यभट्ट (476-550 ई.), वराहमिहिर (505-587 ई.) और परमेश्वर (लगभग 1360-1455 ई.)। हमें इस सूची में रामानुजन् (1887-1920) का नाम भी शामिल करना चाहिए, जिन्होंने गणित में कई प्रमेय विकसित किए और भारतीय दर्शन और परंपरा में बहुत विश्वास रखते थे।

चिकित्सा में भारतीय ज्ञान प्रणाली:

- चिकित्सा में भारतीय ज्ञान प्रणाली का आयुर्वेद द्वारा प्रतिनिधित्व किया जाता है। आयुर्वेद, जिसका अर्थ है 'जीवन का विज्ञान' आहार, जीवन शैली और जड़ी बूटी उपचारों के माध्यम से शारीरिक तत्वों को संतुलित करने की अवधारणा पर आधारित है। चरक संहिता और सुश्रुत संहिता जैसे ग्रंथ शरीर रचना विज्ञान और रोग प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करते हैं।

प्रदर्शन कलाओं में भारतीय ज्ञान प्रणाली:

- भरत मुनि द्वारा 'नाट्य शास्त्र' नृत्य, नाटक और संगीत को सम्मिलित करते हुए प्रदर्शन कलाओं पर एक व्यापक ग्रंथ है। यह कला, मूर्तिकला, चित्रकला और मंदिर वास्तुकला की अवधारणाओं का परिचय देता है।

जनजातियों के पास उपलब्ध बहुत सारा 'भारतीय ज्ञान':

- बहुत सारा 'भारतीय ज्ञान' विशिष्ट समुदायों और जनजातियों के पास उपलब्ध है। इस बात पर जोर दिया जाना चाहिए कि केवल संस्कृत-आधारित ग्रंथ ही भारतीय ज्ञान प्रणाली का संपूर्ण स्रोत नहीं है।
- ऐतिहासिक दृष्टि से असम अपनी पीतल और कांस्य ढलाई और धातुकर्म तकनीकों के लिए प्रसिद्ध था। इसी तरह, गुवाहाटी के अम्बारी में सिरेमिक (चीनी मिट्टी के

बर्तन बनाने की) परंपराएं भारत की सबसे पुरानी परंपराओं में से हैं। शिलांग, मेघालय की लौह और सिरेमिक तकनीकें 3,000 साल से भी ज्यादा पुरानी होने का अनुमान है।

- दुर्भाग्य से, पूर्वी और उत्तर-पूर्वी भारत की विनिर्माण विरासत का सीमित प्रलेखिकरण उपलब्ध है।

'भारतीय ज्ञान' प्रणाली के पुनरुद्धार की राह:

- भारतीय ज्ञान प्रणाली का पुनरुद्धार और अनुकूलन राष्ट्र की समृद्ध बौद्धिक विरासत को संरक्षित करने और इसे आधुनिक समाज की मांगों के साथ संरेखित करने के लिए महत्वपूर्ण है।
- उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 ने एक व्यापक रूपरेखा प्रदान की है जो शैक्षिक पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान प्रणाली को शामिल करने को प्रोत्साहित करती है, सीखने के लिए एक समग्र और समावेशी दृष्टिकोण को बढ़ावा देने में इसके महत्व पर प्रकाश डालती है। यह नीति पारंपरिक ज्ञान को समकालीन वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति के साथ एकीकृत करने का एक अनूठा अवसर प्रदान करती है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

- भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रासंगिकता सुनिश्चित करने के लिए, यह आवश्यक है कि शैक्षणिक संस्थान प्राचीन ज्ञान प्रणालियों को वर्तमान चुनौतियों का समाधान करने के तरीकों से अनुकूलित करने के लिए विद्वानों और चिकित्सकों के साथ सहयोग करें।
- इस ज्ञान को सूचीबद्ध करने और इसे भावी पीढ़ियों के लिए सुलभ बनाने के लिए महत्वपूर्ण शोध किए जाने चाहिए। इसके अलावा, यह पता लगाने के लिए अन्तर विषयक दृष्टिकोण की आवश्यकता है जिससे भारतीय ज्ञान प्रणाली सतत विकास, स्वास्थ्य सेवा, कृषि और प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में कैसे योगदान दे सकता है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

भारतीय ज्ञान प्रणाली की उपनिवेशीकरण से मुक्ति:

परिचय:

- भारत 'ज्ञान-भूमि' शब्द का साक्षात उदाहरण है। यह पहचान न केवल उल्लेखनीय कलाओं, वास्तुकला, खगोल विज्ञान, विज्ञान, आयुर्वेद, भाषाओं, साहित्य, दर्शन और इंजीनियरिंग के प्रसार और उद्भव से स्थापित होती है बल्कि वैदिक साहित्य, वेद, उपनिषद और उपवेद जैसे ज्ञान ग्रंथों और विशिष्ट प्रणालियों की विद्यमानता से भी होती है जिन्होंने प्राचीन काल से लेकर आज तक भारत का मार्गदर्शन किया है।

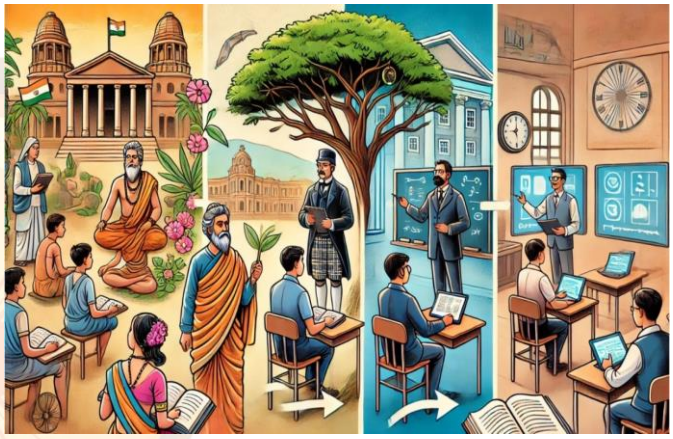

- भारतीय ज्ञान प्रणाली पीढ़ी दर पीढ़ी ज्ञान के व्यवस्थित संचरण को दर्शाती है। हालांकि भारतीय ज्ञान प्रणाली महज एक परंपरा के बजाय एक व्यवस्थित संरचना है और ज्ञान हस्तांतरण की प्रक्रिया है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली जीवन और ब्रह्मांड को समझने का एक व्यापक दृष्टिकोण:

- भारतीय ज्ञान प्रणाली ने अध्ययन शैलियों की एक विस्तृत श्रृंखला के माध्यम से जीवन, समाज और ब्रह्मांड को समझने के लिए व्यापक दृष्टिकोण प्रदान किए हैं।

- आयुर्वेद और योग से लेकर वेदांत और न्याय की दार्शनिक अंतर्दृष्टि तक भारतीय ज्ञान प्रणाली स्थायित्व और सद्भाव में निहित बहुलवादी परंपरा का उदाहरण है।
- भारतीय ज्ञान प्रणाली का अध्ययन करने का उद्देश्य जिज्ञासा और प्रश्न पूछने के वैकल्पिक तरीकों के प्रति व्यक्तियों के दृष्टिकोण को व्यापक बनाना है।
- इसका उद्देश्य ज्ञान के बारे में दृष्टिकोण को बदलना और वैज्ञानिक विचारधारा की संरचना को नया रूप देना है। मूलभूत रूप से इसका उद्देश्य ज्ञान परंपराओं के बारे में चिंतन के लिए एक वैश्विक दृष्टिकोण विकसित करना है।

उपनिवेशवाद ने जानबूझकर भारतीयों को उनकी बौद्धिक विरासत से दूर किया:

- उल्लेखनीय है कि औपनिवेशिक शासन के आरंभ से ही भारतीय ज्ञान प्रणाली से जुड़े अध्ययन परंपराओं को जानबूझ कर हाशिए पर डाल दिया गया।
- मैकाले के 'मिनट ऑन एजुकेशन' (1835) में वर्णित औपनिवेशिक शिक्षा नीतियों ने स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों को 'यूरोसेंट्रिक' प्रतिमानों से बदलने का प्रयास किया जिससे भारतीयों की कई पीढ़ियां अपनी बौद्धिक विरासत से दूर हो गईं।
- प्राचीन काल से ही भारत ने कई सत्ताओं का सामना किया है जिन्होंने इसकी समृद्ध अर्थव्यवस्था का दोहन करने और इसके समृद्ध सांस्कृतिक मूल्यों, दार्शनिक परंपराओं और मान्यताओं को खंडित करने की कोशिश की।

- इसके बावजूद भी प्राचीन काल से लेकर मध्यकाल और आधुनिक काल तक के युगों में भारत ने अपनी सांस्कृतिक विरासत, ज्ञान व्यवस्थाओं और मूल्य प्रणालियों को सफलतापूर्वक संरक्षित किया है।

भारतीयों द्वारा सदियों से परंपरागत ज्ञान प्रणाली का संरक्षण प्रयास:

- भारतीय दर्शन के अभिन्न अंग उपनिषद मानसिक और शारीरिक अवस्थाओं से भिन्न आत्म के सार की खोज करते हैं। अद्वैत वेदांत जो अपने अद्वैतवाद के लिए जाना जाता है, जो मानता है कि आत्मा और ब्रह्म एक समान हैं और अनुभवजन्य दुनिया माया (भ्रम) के रूप में है। इसी तरह भट्ट मीमांसा 'आत्मा' की परिवर्तनकारी लेकिन शाश्वत प्रकृति की खोज करती है।
- जैन धर्म और बौद्ध धर्म भी इस विमर्श में योगदान देते हैं। जैन धर्म में जीव और अजीव का द्वैतवाद है और बौद्ध धर्म में कर्म और पुनर्जन्म के नैतिक उत्तरदायित्व को मानते हुए स्थायी 'स्व' को अस्वीकार किया जाता है।
- मध्यकालीन भारत में भक्ति आंदोलन ने भक्ति में निहित एक दार्शनिक परिवर्तन को विशिष्ट रूप दिया और समानता पर जोर दिया। इस आंदोलन ने स्थानीय भाषाओं और सार्वभौमिक भाईचारे के महत्व को रेखांकित किया।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

- आधुनिक काल में स्वामी विवेकानंद, श्री अरबिंदो और सर्वपल्ली राधाकृष्णन जैसे समकालीन दार्शनिकों ने भारतीय ज्ञान परंपरा के सार को महत्वपूर्ण रूप से रेखांकित किया। विवेकानंद ने तर्कसंगतता, शिक्षा और सार्वभौम धर्म के सिद्धांतों पर बल दिया जिसे वे 'मानवतावाद' के रूप में परिभाषित करते हैं। इसी तरह सर अरबिंदो के दार्शनिक विचार में आध्यात्मिकता, रचनात्मकता और बौद्धिकता, स्वस्थ व्यक्तित्व के विकास के लिए आवश्यक घटक हैं। सर्वपल्ली राधाकृष्णन का दर्शन अद्वैत वेदांत में निहित है जो जैविक एकता, सत्य और मानव प्रकृति की विविधता के सिद्धांतों में विश्वास करते थे।
- इस प्रकार भारतीय ज्ञान प्रणाली एक गतिशील और विकासशील सांस्कृतिक संरचना और परंपरा का प्रतिनिधित्व करती है जिसने अपने मूल विचारों और सिद्धांतों को बनाए रखते हुए सतत रूप से विभिन्न ऐतिहासिक कालों के लिए स्वयं को ढाला है।
- इसके घटक चित, शरीर और आत्मा के बीच आवश्यक संबंधों को रेखांकित करते हैं। यह एक व्यापक संदर्श प्रदर्शित करती है जो भौतिक और आध्यात्मिक कल्याण की खोज को शामिल करता है और सभी तत्वों की परस्पर निर्भरता को स्वीकारता है।

उपनिवेशवाद से मुक्ति और भारतीय ज्ञान प्रणाली:

- आधुनिक काल में उपनिवेशीकरण की प्रक्रिया वैश्विक स्तर पर विभिन्न उपनिवेशवादियों और उपनिवेशित आबादी के बीच भिन्नताओं को दर्शाते हुए भूमि और संसाधनों का विनियोग, औपनिवेशिक उद्यमों के लिए खेती और स्वदेशी संस्कृतियों और परंपराओं का योजनाबद्ध रूप से विघटन शामिल है।
- जब औपनिवेशिक ताकतों ने भारतीय क्षेत्रों को अधीन किया तो उन्होंने न केवल भारत की अर्थव्यवस्था को तबाह कर दिया बल्कि भारतीय शिक्षा प्रणाली, परंपराओं, वास्तुकला और सांस्कृतिक परिपाटियों में हस्तक्षेप सहित विभिन्न तरीकों से भारतीय आबादी पर 'औपनिवेशिक मानसिकता' भी थोपी।
- उपनिवेशीकरण का सबसे गंभीर प्रभाव चेतना के दायरे में हुआ। हमारे विमर्श में जो केंद्रीय प्रश्न बना हुआ है वह यह अभिकथन है कि भारत को 1947 में स्वतंत्रता मिली थी। उसके बाद उपनिवेशवाद, मुख्य रूप से ब्रिटिश उपनिवेशवाद के आर्थिक प्रभाव को समझने के लिए कुछ प्रयास किए गए। फिर भी औपनिवेशिक मानसिकता के अवशेष भारतीय जनता की चेतना से पूरी तरह से लुप्त नहीं हुए हैं, एक ऐसा तथ्य जिसे एडवर्ड सईद ने 'ओरिएंटलिज्म' का नाम दिया है। सईद के

अनुसार, "ओरिएंटलिज्म औपनिवेशिक शासन के लिए एक वैचारिक आधार बना। फिर भी, औपनिवेशिक युग के बाद ओरिएंटलिस्ट धारणाएं गायब नहीं हुईं"।

- इसी तरह फ्रांट्ज फैनन के 'औपनिवेशिक अलगाव' ने पश्चिमी प्रतिमानों द्वारा थोपी गई विसंगति को उजागर किया जिससे स्वदेशी ज्ञान और विरासत के पुनरुद्धार की आवश्यकता हुई।
- उल्लेखनीय है कि उपनिवेशीकरण की अवधारणा पूर्व में औपनिवेशिक समाजों के लोगों द्वारा अनुभव की गई 'जातीय या सांस्कृतिक हीनता' की आंतरिक धारणा से संबंधित है। पश्चिमी शिक्षा को लागू करके औपनिवेशिक शक्तियों ने भारत के सामाजिक ताने-बाने को विकृत कर दिया, उनमें हीनता की भावना को बढ़ावा दिया और स्वदेशी परंपराओं से उनको दूर कर दिया।
- उन्होंने भारतीयों में सभ्यता, ज्ञान और संस्कृति के मामले में पश्चिम के मुकाबले खुद को हीन समझने की धारणा मन में बिठा दी।

विउपनिवेशीकरण के लिए स्वदेशी ज्ञान के महत्व को बहाल करना:

- उपनिवेशीकरण से मुक्त होने में स्वदेशी ज्ञान के महत्व को बहाल करना शामिल है। चेतना को समझने और सत्य को जानने के साधन के रूप में भारतीय दर्शन मन

(मनस) को बहुत महत्व देता है। स्वयं (आत्मा) को समझना व्यक्तिगत कल्याण (सुख) और परम मुक्ति (मोक्ष) को बढ़ावा देता है।

- उल्लेखनीय है कि पश्चिमी ज्ञान प्रणालियों के समर्थकों ने अपने ज्ञान और संस्कृति को सार्वभौमिक माना है और भारत के ज्ञान और संस्कृति को हीन माना है। इसका एक उल्लेखनीय उदाहरण प्रतिष्ठित प्राचीन भारतीय दार्शनिक और गणितज्ञ नागार्जुन को 'भारत का आइंस्टीन' कहना है जबकि आइंस्टीन का जन्म नागार्जुन के जन्म से लगभग 1,600 साल बाद हुआ था। इसी तरह, चाणक्य को 'भारत का मैकियावेली' कहा जाता है। औपनिवेशिक शक्तियों ने एक सुनियोजित प्रयास के तहत इस धारणा को कायम रखा है।
- ऐसे में वर्तमान समय में जब भारत अपनी प्राचीन विरासत के अनुरूप वैश्विक मंच पर अपनी मौजूदगी पुनः स्थापित करने का प्रयास कर रहा है तो भारतीय जनता के लिए 'औपनिवेशिक मानसिक अधीनता' के अवशेषों से खुद को मुक्त करना महत्वपूर्ण है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली की व्यापक और समृद्ध परंपरा:

- भारतीय ज्ञान परंपरा ने सभी के लिए संधारणीयता और समानता पर सतत रूप से जोर दिया है। इसमें जीवन के विभिन्न पहलुओं पर चिंतन भी शामिल है जिसमें पर्यावरण संरक्षण भी शामिल है।

- ग्रामीण अर्थव्यवस्था और कृषि उत्पादन, ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण रहा है और दुनिया के अन्य क्षेत्रों की तुलना में इसने एक बड़ी आबादी का पोषण किया है। सूखे की स्थिति में उपयोग के लिए अधिशेष को सावधानीपूर्वक संग्रहीत किया जाता था।
- भारत की स्वदेशी शिक्षा प्रणाली और कौशल विकास पद्धतियों से कई स्वदेशी भारतीय उद्योग फले-फूले और भारत में निर्मित सामान को दुनिया भर में सराहनीय महत्व दिया गया। रोग की रोकथाम के लिए आयुर्वेद और योग जैसी समग्र प्रणालियां अन्य मिसाल हैं।
- भारतीय विद्वानों ने उन्नत गणितीय अवधारणाओं को विकसित किया जिनमें शून्य का आविष्कार और दशमलव प्रणाली शामिल है। इस अवधि के दौरान तर्कशास्त्र और दर्शनशास्त्र के विभिन्न स्कूल फले-फूले। पाणिनि को भाषा विज्ञान के जनक के रूप में मान्यता प्राप्त है।

भारतीय को 'मन के उपनिवेशवाद' से मुक्त होना होगा:

- उल्लेखनीय है कि आज के वैश्विक युग में यह समझना आवश्यक है कि पूरी दुनिया में सूचनाओं की बाढ़ आई हुई है लेकिन ज्ञान की कमी है। दुनिया एक रेस

ट्रैक में बदल रही है जहां हर कोई बिना समझे दौड़ रहा है। प्रत्येक व्यक्ति का मानना है कि वे स्वतंत्रता का आनंद ले रहे है फिर भी वास्तविकता यह है कि सभी एक भ्रामक दुनिया के बंदी हैं जिसमें कुछ ऐसी चीजें या रास्ते नहीं हैं जो उन्हें दुःख से मुक्ति दिला सकें।

- हम पर्यावरणीय मुद्दों, जलवायु परिवर्तन, भूख और महामारी जैसी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं और हम जो कुछ भी हासिल करते हैं वह अक्सर मानव जीवन की कीमत पर होता है।
- इसलिए इन बदलते समय में यह सर्वोपरि है कि भारतीय अपने 'अस्तित्व की प्राप्ति' लिए खुद को 'मन के उपनिवेशवाद' से मुक्त करें। इस उद्देश्य पूर्ति के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा का पालन करना महत्वपूर्ण है जिसमे 'आत्मज्ञान' के लिए सभी आवश्यक तत्व शामिल हैं और यह मानव जीवन और अनुभव के हर पहलू का समाधान प्रदान करती है।